Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 01, June 2021
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021
UGC CARE listed Journal

देव लोक गायन परम्परा 'बिरसू'

Gopal Sharma

Vill. Bhatyodi, PO Bakras, Shilai, Sirmour, Himachal Pradesh

शोध सार

'बिरसू' महासू देवता की स्तुति में गाया जाने वाला पारम्परिक गीत है। 'बिरसू' में गायन, वादन और नृत्य तीनों विधाओं का समावेश होने के कारण यह आम जनमानस के हृदय में अमिट छाप छोड़ता है। इस देव लोक गायन 'बिरसू' में जनसाधारण के धार्मिक विश्वासों, मान्यताओं, सामाजिक, आर्थिक और ग्राम्य जीवन की संघर्षपूर्ण स्थिति का प्रतिबिम्ब स्पष्ट दिखाई देता है। लोकभाषा शैली के साहित्यिक गीत 'बोरमी न जाऐ रे देवा मेरा' का परम्परागत वाद्ययंत्रों की धुनों और ताल के साथ आरम्भ एवं अन्त होता है। 'भाद्रपद (अगस्त) शुक्ल पक्ष' की ऋषि पंचमी को पांजवी उत्सव के रूप में मानाया जाता है। 'महासू' देवता के इस पर्व (जगरण) में पूरी रात बिरसू गायन होता है। बिरसू गायन में प्रयोग होने वाले संगत वाद्य ढोलक, खजरी, शंख आदि होते हैं। इसमें भक्ति रस, करुण रस, शांत रस, अद्भूत रस की निष्पति होती है।

बीज शब्दः बिरसू, महासू देवता, पांजवी, शिलाई

भूमिका

हिमाचल प्रदेश एक अत्यंत सुन्दर राज्य है जो अपनी संस्कृति और देव परमपरा के लिए विश्व भर में प्रसिद्ध है। हिमाचल प्रदेश का सिरमौर जिला अपनी समृद्ध संस्कृति के लिए जाना जाता है। यह अपनी सांस्कृतिक वेश–भूषा तथा प्राकृतिक सौन्दर्य एवं धार्मिक स्थलों के लिए विख्यात है। अद्भुत प्राकृतिक सौन्दर्य से युक्त पहाड़ों, नदी, तालाब झरनें, 'चूढ़धार' की मोहक ऊँची चोटियाँ जिसमें भगवान शंकर का वास है तथा मंदिरों और पवित्र जप–तप स्थलों को अपने आंचल में समेटे 'रेणुका जी' का यह सुन्दर रूप और यहां का प्रसिद्ध अंतर्राष्ट्रीय रेणुका जी मेला लाखों श्रद्धालुओं को अनायास ही चुंबक की भांति अपनी ओर खींचता चला जाता है। आध्यात्मिक दृष्टि से सिरमौर में बहुत से देवी–देवताओं को कुलईष्ट देवता के रूप में पूजा जाता है। शिलाई क्षेत्र में 'महासू' महाराज को मुख्य देवता के रूप में पूजा जाता है जो रक्षा तथा सुख–समृद्धि का प्रतीक है। महासू देवता को प्रसन्न करने के उद्देश्य से शिलाई क्षेत्र के लोग पारम्परिक देव लोक गायन करते हैं, जिसे बिरसू के नाम से जाना जाता है।

शोध प्रविधि

उद्देश्य

- देव लोक गायन परमपरा बिरसू का अध्ययन करना।

शोध क्षेत्र

- इस शोधकार्य के लिए सिरमौर के 'शिलाई' क्षेत्र को शोध क्षेत्र के रूप में लिया गया।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 01, June 2021
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021
UGC CARE listed Journal

शोध विधि

- इस शोधकार्य में सर्वेक्षणात्मक विधि का प्रयोग किया गया।

प्राथमिक स्त्रोत

- लोक गायकों के साक्षात्कार।

बिरसू

अब तक की खोज एवं जनश्रुति अनुसार यह दृष्टिगोचर होता है कि ''बिरसू एक व्यक्ति था जो महासू देवते का भोड़/माली (लोक भाषा का शब्द) पुजारी था, जिसे महासू महाराज की चमत्कारिक शक्तियों का ज्ञान था''।[1] महासू देव की उत्पत्ति (जन्म) के सम्बन्ध में वर्णन निम्न प्रकार से है।

महासू देवता

ऐसी मान्यता है कि ''महासू देव की उत्पत्ति भगवान शिव के पुत्र कार्तिकेय स्वामी के अंशावतार रूप में हुई है। एक दन्तकथा के अनुसार शिव–पार्वती, गणेश सहित कश्मीर की यात्रा करते हुए एक तालाब पर पहुँचे, जहां पर सूर्यदेव, अग्निदेव, कार्तिक स्वामी और भगवान गणेश में अग्रिम पूजा के लिए प्रतिस्पर्धा हुई कि जो देव चार धाम की परिक्रमा कर सर्वप्रथम शिव के समक्ष उपस्थित हो वही भगवान शिव की अग्रिम पूजा का अधिकारी होगा। इसमें भगवान गणेश विजयी होते हैं, जिससे कार्तिक स्वामी क्रोधित होकर अपने शरीर के मांस को काटकर चार भाग करते हैं, मांस की चारों ढेरी (भाग) को भगवान शिव समुद्र में डालते हैं, जिनसे उलल नाग, विमल नाग, वासुकी नाग, एवं भडूवाना नाग ने मांस का भक्षण किया, उनके ही पेट से चार राजकुमार उत्पन्न हुए। इन्हीं चार वीर– कपाला वीर, क्यालू वीर (कोईलू) केलाथ वीर तथा शेड़कूडिया वीर को महासू कहा गया।''[2]

'बिरसू' गायन की लोक मान्यताऐं

हिमाचल प्रदेश के लगभग सभी पहाड़ी क्षेत्रों में 'बिरसू' गायन होता है। हिमाचल प्रदेश से बाहर आज के उत्तराखण्ड राज्य में 'बिरसू' गायन होता है, क्योंकि उत्तराखण्ड में महासू का प्राचीन भव्य मन्दिर है। ''महासू देवता उत्तराखण्ड राज्य के जौंसार बाबर, जिला शिमला, सिरमौर के उपरी भाग का मुख्य देवता है, इसी देवता के नाम पर जिला शिमला 'रामपुर रियासत का पुराना नाम महासू था। महासू को सुर्यवंशी माना जाता है, जिसका आगमन कश्मीर या कुल्लू–कश्मीर से हुआ है।''[3] महासू के कहीं चार तथा पांच तो कहीं सात भाई माने जाते हैं। बोठा, चालदा, बाशी या बाशिक, पबासी या पबारी, शेड़कुलिया या शेड़कुलियाऊ या शिड़गुल, बनाड़ और गुड़ारू इस प्रकार इनके नाम समक्ष आते हैं। शेड़कुलिया को मंत्री भी मानते हैं। बोठा महासू को राजा माना जाता है। जैसा कि नाम से स्पष्ट है बैठकर राज करने वाला, जबकि चालदा महासू इधर–उधर गांव जिला राज्य से बाहर चला जाता है।''[3] जिस प्रकार एक राजा के राज्य में अस्त्र–शस्त्र, राज्य जिन्ह, राजा, बजीर, सेनापति इत्यादि की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार महासू देवता के चरित्र–चित्रण से परिलक्षित होता है कि वह इस महासू क्षेत्र के राजा है। उत्सव के समय महासू को उसके गर्भगृह से बाहर आने पर उनके अस्त्रों–शस्त्रों की पूजा और स्नान होता है। सभी लोग स्थान–स्थान पर रुककर, नवयुवक इकट्ठे होकर ढोल नगाड़ों के साथ महासू का उदघोष करते हैं।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 01, June 2021
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021
UGC CARE listed Journal

''तेरा देवा, महासूओ।

रक्षा रखे, महासूआ।।

जिसका अर्थ है, हम तेरा नाम जपते रहेंगे, अब आप ही हमारी हर प्रकार से रक्षा करना।''[4]

शंख और घण्टियों की ध्वनि से गुन्जायमान होकर मंदिर में पुनः स्थापित होते हैं। लोग अपनी मन्नत पूर्ति के लिए देवता की पालकी को फूल, चावल धन–दौलत इत्यादि का तर्पण करते हैं। लोक मान्यता अनुसार ''ऐसा माना जाता है जो एक बार महासू महाराज का भोग (प्रसाद) ग्रहण कर लें, उसे प्रति वर्ष पांजवी (पंचमी) उत्सव में उपस्थित होना पड़ता है''।[5] यदि किसी व्यक्ति के साथ अन्याय होता है, लोग न्याय प्राप्ति के लिए देवी–देवता के समक्ष जाते हैं और महासू देवता न्यायप्रिय देव हैं। ऐसा उनका विश्वास है।

पांजवी (पंचमी) उत्सव

इस पृथ्वी पर रहने वाले प्राणी किसी न किसी समाज और उसकी परम्परा से जुड़े है। बिरसू देव परम्परा एक ऐसी प्रथा है, जो वर्षों से चली आ रही है। पांजवी (पंचमी) उत्सव आज तक इसी परम्परानुसार मनाई जाती है।

''बिरसू गायन भाद्रपद शुक्ल पक्ष की ऋषि पंचमी को पांजवी उत्सव के रूप में मनाया जाता है। इस अवसर पर ढोल नगाड़े आदि पारम्परिक वाद्ययंत्रों की धुनों के साथ महासू देवता का स्तुतिगान 'बोल मिला जाई रे देवा मेरा' इसे ही बिरसू गीत कहते हैं से किया जाता है। लोगों की मान्यता है कि पांजवी उत्सव के आयोजन से प्रसन्न होकर महासू देवता भूत–प्रेत आदि दुरात्माओं से मुक्ति प्रदान कर रक्षा करते हैं'।[6] पूर्वकालिक घटना क्रम को जोड़कर पंचमी उत्सव में पूरी रात बिरसू का गायन होता है। यह उत्सव महासू देवता के प्रांगण में होता है। पंचमी उत्सव को देवताओं का मेला कहते हैं, क्योंकि इस पर्व में सभी देवी–देवताओं का समागम होता है। रुष्ठ देवता अपने क्रोध को शान्त करने के लिए अग्नि में अंश्कालिक प्रवेश करते हैं। इस प्रकार के अन्य करतब जैसे– जलते हुए कोयले खाना, लाल मिर्चों का सेवन करना, गर्म लोहे के खाण्डे (तलवार) को पकड़ना इत्यादि।

अन्ततः महासू देवते द्वारा पीठ पर थाप (थपकी) लगाकर शांत किया जाता है। देवताओं को प्रेरित करने के लिए सुर और ताल के साथ नृत्य होता है, बहुतायत से देखा गया है कि बिरसू गायन के समय देवता नृत्यमग्न होते हैं। इन सभी शक्तिशाली करतब को देखने के लिए लोगों की भीड़ लग जाती है। पांजवी (पंचमी) उत्सव में सामान्य जन बिरसू नाटी (नृत्य) का आनन्द लेते हैं। पांजवीं (पंचमी) के जागरण में मध्यरात्री को भोग चढ़ाकर, बचा हुआ जनसमूह में बाँटा जाता है। ये उत्सव हमारी धार्मिक आस्था और मानवीय भावना को स्पन्दित करता है। बिरसू का साहित्य लोक बोली (भाषा) में निबद्ध रहता है। इस गीत में विभिन्न देवी–देवताओं की स्तुति, कार्यों आदि का वर्णन गाया जाता है।

सांगीतिक पक्ष

सांगीतिक दृष्टि से 'बिरसू' गायन में संगीत की तीनों विधाओं का निर्वहन स्पष्टतया दिखाई पड़ता है। गायन, वादन और नृत्य के समोवश से अनेक प्रकार के भावों और रसों की निष्पति होती है। लोक साहित्य की छंद रचना, बहुत सुन्दरता से ताल पर बिठाई जाती है जो श्रोताओं को मंत्रमुग्ध करती है।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 01, June 2021
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021
UGC CARE listed Journal

'बिरसू' गायन, भारतीय शास्त्रीय संगीत के दृष्टिकोण से मुख्यतः राग भीमपलासी की स्वर रचना में निर्दिष्ट होता है, परन्तु कहीं–कहीं इसके अन्तरे में भीमपलासी के समप्राकृतिक रागों की छाया पड़ती है। इसके कारण बिरसू और भी रोचक लगता है। इसका लोक साहित्य इस प्रकार है।

स्थाई

बोरमी न जाऐ रे देवा मेरा।

बोरमी न जाऐ रे।।

भावार्थ

इसका भाव यह है कि बिरसू (देवा) को बोरमी नामक स्थान पर जाने से लोगों द्वारा रोका जा रहा है। अप्रिय घटना से आशंकित होकर कहा गया है 'बोरमी न जाऐ रे देवा मेरा'

स्थाई

1	2	3	4	5	6	7	8
						प़नि़ बोरमी	सा–सा नाऽऽ
ममग जाऐरे	रेसानि़ देवा मेरा	सा–रे बोरमी	ग–रे नाऽऽ	सा–सा जाऐऽ	–सा– रेऽऽ		

अन्तरा

कोला गाईणी चूढ़ीरी जेथे, उपीनो लींगो।

मोया गाइणी सोरांई री, सूने–चाँदी री पींगो।।

भावार्थ

इसका भावार्थ यह है कि, चूढ़धार स्थान पर अद्‌भूत (कला) चमत्कार है, जहाँ पर भगवान शंकर के लिंग की उत्पत्ति होती है। इसी प्रकार सरांह नामक स्थान पर भी चमत्कारी शक्तियाँ है, जहाँ पर सोने–चाँदी का झुला है।

अन्तरा

1	2	3	4	5	6	7	8
						सा–सा कोलाऽ	ग म– गाईणी
पपप चड़ीरी	मम– जेथेऽ	पमप उपीनों	ग़म ग़ लींऽगो	ममग़ मोयाऽ	मम– गाईणी	ग़रेसा सोरांई	नि़–नि़– रीऽऽऽ

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 01, June 2021
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021
UGC CARE listed Journal

ग॒म–	मम–	ग॒रेसा	सा–सा	सासा–	निसा–
सुनेऽ	चाँदीऽ	रीऽऽ	पींऽगो	ऽऽऽ	ऽऽऽ

ताल

बिरसू गायन में बजने वाली ताल आठ (8) मात्रा की ताल है। हिमाचल में इसे नाटी ताल या लोक भाषा में इसे मुंजरा ताल कहते हैं जिसके बोल इस प्रकार हैं।

मात्रा	1	2	3	4	5	6	7	8
बोल	धारा	राता	घिना	ताती	घिना	ताती	झिना	तिरकिट
ताल चिन्ह	X				0			

भारतीय शास्त्रीय ताल पद्धति में

मात्रा	1	2	3	4	5	6	7	8
बोल	धाधिं	ऽता	धींधीं	नागे	धींधीं	नागे	धिंना	तिरकिट
ताल चिन्ह	X				0			

संगत वाद्य

'बिरसू' गायन में संगत के लिए मुख्यतः तीन प्रकार के वाद्य प्रयुक्त होते हैं, जिनमें अवनद्ध वाद्य, घन वाद्य और सुषिर वाद्य है। 'तंत्री वाद्यों का प्रयोग नहीं होता'। महासू देवता के 'उतारीक' को प्रसन्न प्रायोजन से वाद्यों को बजाते हैं। इस प्रकार के वाद्यों में बिरसू का लोक साहित्य नहीं होता, जबकि बिरसू नाटी में साहित्य की उपलब्धता रहती है तथा ढोलक, खजरी, शंख और हाथ से ताली देना इत्यादि के साथ 'बिरसू' नृत्य होता है जिससे विभिन्न रस प्राप्त होते है।

रस निष्पत्ति

संगीत एक ऐसी कला है जिसमें सभी रस विद्यमान रहते हैं। ''बिरसू को सुनते समय भक्ति रस, करुण रस, शांत रस, अद्भूत रस की प्राप्ति होती है जबकि देखने पर भयानक रस, रौद्र रस, वीर रस इत्यादि की अनुभूति होती है। इसके लोक साहित्य में भी रसों की परिपूर्णता है।''[7] कहने की आवश्यकता नहीं कि साहित्य समाज का दर्पण होता है और संस्कृति उस दर्पण में झांकने का प्रयास।

निष्कर्ष

पूर्ण अध्ययन के पश्चात् यह निष्कर्ष निकलता है कि बिरसू का गायन 'महासू देवता के स्तुतिगान के रूप में किया जाता है। भगवान शिव के पुत्र कार्तिक स्वामी के अन्शावतार रूप में महासू देवता का पांजवी (पंचमी) उत्सव पूरी रात ढोल–नगाड़ों के साथ हर्षोउल्लास के साथ मनाया जाता है। सम्पूर्ण रात्रि 'बिरसू में लोक भाषा के साहित्य तथा ढोलक खंजरी इत्यादि वाद्य यन्त्रों के साथ गायन, वादन और नृत्य तीनों विधाओं का समावेश

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 01, June 2021
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021
UGC CARE listed Journal

रहता है, जिसके कारण यह सामान्य जनमानस के सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक तथा राजनीतिक जीवन को स्पर्श करता हुआ हमारी संस्कृति और परम्परा को जीवन्त रखते हुए हृदय स्पन्दित करता है।

संदर्भ

वशिष्ठ, सुदर्शन. (2007). देव परम्परा. सुहानी बुक्स सी–37, दिल्ली.
शर्मा, रूप. (2012). हिम दर्पण. करण प्रकाशन, मण्डी।.

साक्षात्कार

1. चेतराम शर्मा, ग्राम–भटयूड़ी, शिलाई, सिरमौर, साक्षात्कार 16–01–2021
2. पं. महेन्द्र सिंह, ग्राम–भटयूड़ी, शिलाई, सिरमौर, साक्षात्कार 17–01–2021
3. ज्ञान चन्द्र शर्मा, ग्राम–टटियाना, शिलाई, सिरमौर, साक्षात्कार 18–01–2021
4. शुपा राम, ग्राम–बकरास, शिलाई, सिरमौर, साक्षात्कार 19–01–2021
5. राम लाल शर्मा, ग्राम–भराईना, शिलाई, सिरमौर, साक्षात्कार 20–02–2021